P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# टिहरी बांध : बदलता सामाजिक परिदृश्य व विकास की संभावनाएं

**शरद कुमार त्रिपाठी**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
पं0ल0मो0श0 राजकीय महाविद्यालय,
ऋषिकेश, देहरादून
उत्तराखण्ड, भारत

**सारांश**

टिहरी शहर के निकट दो नदियों के संगम स्थल पर केन्द्र सरकार ने ऊर्जा उत्पादन के लिये एक बांध के निर्माण की घोषणा की। यह एशिया के एक बड़े बांध के रूप में जाना जाता है तथा टिहरी शहर को विस्थापित करके पास की एक पहाड़ी पर नई टिहरी बसाने की घोषणा की, उसके पश्चात टिहरी दो नामों से जाना जाने लगा– पुरानी टिहरी व नई टिहरी। वर्तमान में पुरानी टिहरी का स्थान एक बड़ी झील ने ले लिया है जो लगभग 40 किमी0 लम्बी व .5–1.5 किमी0 चौड़ी है। टिहरी झील के उस पार उत्तर का क्षेत्र जो एक समय में उन्नति की ओर अग्रसर था आज सामाजिक उन्नति व विकास के क्षेत्र में निरन्तर पिछड़ता जा रहा है। इस पिछड़ेपन का कारण मूलतः टिहरी झील है। सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा टिहरी झील के उस पार उत्तर में बसे क्षेत्र के विकास के प्रति सम्भावित योजना के प्रति लापरवाही का द्योतक है जिसको टिहरी बांध निर्माण के समय गम्भीरता से नहीं लिया गया। आवागमन के साधनों की उचित व्यवस्था के न होने के कारण वह क्षेत्र जो पूर्णतः पुरानी टिहरी में हो रहे आर्थिक सामाजिक क्रियाकलापों पर निर्भर था टिहरी शहर के डूबने के पश्चात बेसहारा हो कर रह गया है। वहाँ के निवासी इस आशा में हैं कि केन्द्र सरकार या राज्य सरकार कोई योजना लेकर आएगी जिससे उनका भी कल्याण हो सकेगा, लेकिन सच्चाई यह है कि टिहरी झील जो अब पानी से भर चुकी है किसी भी विकास में सबसे बड़ी बाधक है। सामने 2 किमी0 की हवाई दूरी पर दिख रहे मकान में पहुँचने के लिये 50–70 किमी0 की दूरी तय करना आम बात है।

सारांश है कि पुरानी टिहरी शहर के पानी से भर जाने के पश्चात टिहरी झील के उस पार (उत्तर दिशा) स्थित क्षेत्र में वर्तमान में हो रहे सामाजिक परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, रहन सहन में परिवर्तन, कार्यशैली में परिवर्तन व विकास की नगण्य संभावनाओं के पीछे वस्तुतः मूलभूत कारण क्या हैं ? ऐसा क्या करें कि यह क्षेत्र विकासोन्मुख हो जाये, इस क्षेत्र से जनता का स्थानान्तरण रुक जाये तथा यह क्षेत्र स्वावलम्बी हो जाये। इस क्षेत्र में विकास की नई संभावनाओं जैसे ध्यान (मेडिटेशन), वन्यजीव अभ्यारण, खेलकूद, वनस्पतियों के अध्ययन, प्राचीन गुफायें, जड़ी बूटियों व प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाले रसायन तत्वों जैसे शिलाजीत के बड़े जमाव से सम्बन्धित शोध, भूआकृतिक अध्ययन आदि का महत्वपूर्ण स्थान हो सकता है। टिहरी झील जो पूर्व में चिन्यालीसौड़ से लेकर उत्तर में घन्साली तक विस्तृत है यहाँ के वन्य जीव प्राणियों के स्थानान्तरण में सबसे बड़ी बाधक है फिर भी उनके आक्रामक व्यवहार में विशेषतः मनुष्यों के लिये सीमित स्थानों पर परिवर्तन इत्यादि पर शोध के लिये यह स्थान उत्तम है। देश–विदेश के पर्यटकों के ध्यानाकर्षण की यहाँ असीमित संभावनाएं हैं जिससे यहाँ की जनता को आय के विभिन्न स्रोत उनके स्थान पर ही मिल जायेंगे जो उनके व क्षेत्र के विकास में सहायक होंगे।

**मुख्य शब्द :** टिहरी, भिलांगना, गंगा, मानसून।

**प्रस्तावना**

टिहरी बांध गढ़वाल की दो प्रमुख नदियों भिलांगना व भागीरथी के संगम स्थल पर स्थित है। इन दोनो नदियों के संगम के बाद भागीरथी नदी का नाम गंगा हो जाता है। टिहरी बांध के सर्वेक्षण की योजना की शुरुआत 1961 में हुयी तथा इस बांध का कागजी ढाँचा 1972 में तैयार हो गया था जो उस समय के सोवियत रूस की मदद से बनाया जाना था। यह 2006 में बन कर तैयार हो गया था, इस बांध की कार्य करने की समय सीमा लगभग 100 वर्ष मानी गयी है।

1972 में जब इस बांध की योजना तैयार की गयी तब भागीरथी व भीलांगना नदियों के संगम स्थल पर एक शहर बसा हुआ था जिसका नाम टिहरी था तथा टिहरी के राजा का मुख्य निवास स्थल यही शहर था जहाँ उनका राजमहल था। आस पास के गावों की सभी प्रकार की सामाजिक, आर्थिक व विकास से सम्बन्धित क्रियाएँ इसी टिहरी शहर से जुड़ी हुयी थी। जब टिहरी शहर का स्थान टिहरी झील ने ले लिया तथा टिहरी शहर को अन्यत्र पास की एक ऊँची पहाड़ी बसा कर उसका नाम नई टिहरी रख दिया गया तो आस पास के गावों की दूरी काफी अधिक बढ़ गयी तथा नई टिहरी शहर तक पहुँचने के आवागमन के साधनों का अभाव हो गया तो टिहरी झील के उत्तर दिशा में उस पार बसे क्षेत्रों जैसे मदन नेगी, धारकोट, रिंडोल, पटूरी, बंगद्वारा, पथियाना, काण्डाखाल, रौलाकोट, कोलधार इत्यादि जो पुरानी टिहरी के निकट स्थित थे, में सामाजिक, आर्थिक व विकास के क्षेत्र जो गिरावट प्रकट हुयी वह सोचनीय विषय है।

**प्रमुख समस्याएं**

टिहरी बांध के निर्माण की योजना तैयार करते समय बहुत से महत्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान नहीं दिया गया जो आज परेशानी का सबब बने हुये हैं तथा प्रभावित गाँव के सामाजिक, आर्थिक व विकास में बाधक हैं प्रमुख तथ्य जिन पर ध्यान नहीं दिया गया निम्न हैं :–

1. टिहरी झील के जल से भरने से पूर्व आवागमन के लिये झील पर पुल का निर्माण न किये जाने से पुरानी टिहरी से जुड़े बहुत से गाँवों की दूरी नई टिहरी से 50 से 70 किमी0 बढ़ गयी है धारकोट गाँव जो भागीरथीपुरम के ठीक सामने की पहाड़ी के मध्य स्थित है, से एक झूला पुल पीपलडाली के पास घनसाली मार्ग पर 25 किमी0 की दूरी पर है व दूसरा झूला पुल विपरीत दिशा में 35 किमी0 की दूरी पर बाल्ड गाँव के निकट स्थित है जो चम्बा उत्तरकाशी मार्ग पर निकलता है कहने का अर्थ है कि पूरी टिहरी झील पर केवल दो ही झूला पुल हैं जिनपर केवल मध्यम आकार की गाड़ियाँ ही निकल सकती हैं।
2. झील के चारों ओर वृक्षारोपण न किये जाने से आस–पास की भूमि का निरन्तर धसाव हो रहा है दरारे पड़ रही हैं जिससे पर्वतीय कृषि को नुकसान हो रहा है। कृषकों की भूमि को झील निगल रही है।
3. टिहरी बांध के निर्माण प्रक्रिया में प्रयोग किये गये विस्फोटक पदार्थों के विस्फोट से उत्पन्न हुये कम्पन से प्राकृतिक जल स्रोत सूख गये हैं तथा जो बचे हुये हैं उनमें जल की मात्रा कम हो गयी है जिससे किसी भी प्रकार का विकास संभव नहीं है कृषि प्रभावित हो रही है तथा लोग अपने परिवार समेत या परिवार के सदस्य दूसरे स्थानो पर अपनी रोजी रोटी के लिये स्थानान्तरित हो रहे हैं, यहाँ पर दिया तले अंधेरा जैसी स्थिति है पास में एशिया के एक बड़े बांध से निर्मित एक बड़ी झील जिसके आस पास के कृषक पानी की कमी से जूझ रहे हैं।
4. टिहरी झील से आस पास के क्षेत्रों की जलवायु परिवर्तित हुयी है, वर्षा में कमी प्रकट हुयी जिसका प्रमुख कारण ग्रीष्मकाल में हवा का कम दबाव का क्षेत्र यहाँ न बन पाना है ( लेखक के अपने अनुमान हैं ) ग्रीष्मकाल में उत्तर भारत में गर्मी अधिक होने से यहाँ की वायु गरम होकर हल्की हो जाती है तथा वायुमण्डल में ऊपर की ओर उठ जाती है जिससे यह क्षेत्र हवा के कम दबाव का क्षेत्र बन जाता है जिससे एक प्रकार का वैक्यूम बन जाता है जिसे भरने के लिये मानसूनी हवायें उत्तर भारत की ओर बढ़ने लगती है जिससे 15 जून के आस पास उत्तर भारत में वर्षा होती है लेकिन इसी तथ्य को टिहरी क्षेत्र के सम्बन्ध में देखें तो गर्मी बढ़ने के साथ झील में वाष्प बनने लग जाती है जो आस पास की हवा को जल्द गरम नहीं होने देती होगी जिस कारण यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तरह हवा के कम दबाव वाला क्षेत्र नहीं बन पाता है जिस कारण मानसूनी नम हवायें इस क्षेत्र की ओर कम आकर्षित होती होंगी जिस कारण मानसूनी वर्षा कम होती है। टिहरी झील निर्माण से पूर्व यहाँ वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती थी जिससे यहाँ स्थित जल स्रोत रीचार्ज हो जाते थे जो वर्ष भर जल उपलब्ध करवाते रहते थे लेकिन वर्तमान में ग्रीष्मकाल में ये सूख जाते हैं जिस कारण पानी की भारी कमी इस क्षेत्र के लोग झेलते हैं दूसरी तरफ शीतकाल में कभी कभी टिहरी झील से उठा हुआ कोहरा निकट के क्षेत्रों में पहुँच जाता है तथा पर्वतीय भाग में कोहरे को देख कर आश्चर्य होता है।

इस पर्वतीय क्षेत्र की मूल समस्या जल की कमी है जिस कारण यहाँ कृषि पूरी तरह से वर्षा पर निर्भर है तथा वर्षा में निरन्तर गिरावट आने से कृषि सम्भव नहीं है अतः रोजगार के लिये यहाँ का युवा वर्ग दूसरे शहरों में नौकरी की तलाश मे स्थानान्तरित हो रहा है जिससे सामाजिक परिदृश्य बदल रहा है अधिकतर गावों में वे ही बुजुर्ग दम्पतियाँ व लड़कियाँ ही बचे हैं जो गरीब हैं, सक्षम लोग यहाँ से दूसरे क्षेत्रों में स्थानान्तरित हो रहे हैं, दिन भर की कमाई शाम को शराब में बह जाती है, दिन भर खाली समय में लोग घरों के सामने ताश खेलते हुये दिखाई देते है, जो जुएं की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। सबसे अधिक शोषण यदि किसी का हो रहा है तो वे महिलायें है, नरेगा में दिन भर मजदूरी करके लौटी कुछ महिलाओं की कमाई उसका पति शराब पीने के लिये छीन लेता है। लोग संसाधन विहीन हैं तथा छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण करने एवं अन्य कार्य हेतु प्रतिदिन 8–10 किमी0 पैदल चलती हैं। सामाजिक परिदृश्य पूरी तरह से छिन्न भिन्न है।

**विकास की संभावनाएं**

इस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों तथा जलवायु के आधार पर निम्न विकास कार्यक्रम चलाने से यहाँ की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में सुधार हो सकता है तथा यह क्षेत्र भी विकास के मार्ग पर बढ़ कर आत्मनिर्भर बन सकता है :–

1. टिहरी झील के पानी को पम्पिंग करके विभिन्न गावों में पहुँचाया जाय।
2. पर्यटन, अध्यात्म, मेडिटेशन (ध्यान) से सम्बन्धित केन्द्र खोले जायें तथा पर्यटकों को इनकी ओर आकर्षित किया जाये।
3. कृषकों को ऐसी जड़ी बूटी उगाने के लिये प्रशिक्षित किया जाये जो सूखे में उगती हों।
4. चट्टान चढ़ाई (Rock Climbing) से सम्बन्धित विभिन्न केन्द्र खोले जाये जिसके लिये इस क्षेत्र में काफी सम्भावनायें हैं।
5. खुम्बी उत्पादन (Mushroom Cultivation) के लिये यहाँ की जलवायु वर्ष पर्यन्त अनुकूल है बस सुविधायें, प्रशिक्षण केन्द्र उपलब्ध करवाना है।
6. यहाँ धारकोट व काण्डाखाल के बीच का 6 किमी के क्षेत्र में अधिकतर लैपर्ड दिखाई पड़ जाते हैं धारकोट से 1.5 किमी0 आगे चलने पर एक घाटी है जिसे स्थानीय लोग लैपर्ड घाटी कहते है क्योंकि इस घाटी में कई लैपर्ड एक साथ देखने को मिल जाते हैं इस क्षेत्र को लैपर्ड पार्क घोषित कर दिया जाये तथा पर्यटकों को इसकी ओर आकर्षित किया जाये।
7. यहाँ पर धारकोट के ऊपरी भाग में जंगलों के बीच में कुछ प्राकृतिक गुफायें है जिनके बारे में कम ही लोग जानते हैं जो कि पर्यटकों को आकर्षित कर सकती है।
8. पग पग पर जड़ी बूटियाँ प्राकृतिक रूप में पायी जाती हैं जो शोध कर्ता के लिये अध्ययन का आधार बन सकती हैं।

**निष्कर्ष**

तात्पर्य यह है कि भले ही टिहरी झील बनने के बाद यह क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़ गया है लोगों के व्यवसाय सीमित हो गये हैं, मौसमी दशायें बदलने से जल की कमी से कृषि कार्य समाप्ति की ओर है जिसके कारण परिवार टूट–टूट कर स्थानान्तरित हो रहे है फिर भी विकास की असीम सम्भावनायें यहाँ उपस्थित है जिनके प्रचार प्रसार से पर्यटकों को इस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जा सकता है जिससे स्थानीय लोगों के जीवन स्तर मे सुधार होगा तथा यह क्षेत्र भी विकास की ओर अग्रसर होगा ।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

*टिहरी अधोपन्त – टिहरी डैम की कथा – लेखक मनीराम बहुगुणा*

*Ecology of Tehri Dam,Author - Dr. Khanna, Pramod Khanna & Vikas singh, Publisher : Biotech Books India.*

*Environmental ImpactAssessment Of Tehri Dam - Veerlapani Govardhan,Ashish Publication House*